

नीतिशास्त्र।

2. वैज्ञानिक धर्म और नीतिशास्त्र (Scientific Religion and Ethics)—प्रत्यक्ष धर्म का कोई सम्बन्ध किसी भी अलौकिक शक्ति से नहीं है; यह तो समस्त 'मानव का धर्म' है। प्रत्यक्षवाद के नैतिक नियम, संक्षेप में, इस प्रकार हैं—दूसरों की सेवार्थ अधिक से अधिक उपयुक्त होने के लिए शारीरिक, बौद्धिक तथा नैतिक उन्नति।

3. प्रत्यक्ष राजनीति (Positive Politics)—इस प्रकार की राजनीति का उद्देश्य है युद्ध को दबाना व यूरोपियन राज्यों को मिलाकर मित्रराष्ट्र की स्थापना करना।

समाज को उक्त आदर्शों के अनुसार बदलने के लिए प्रत्यक्षवाद समस्त हिंसात्मक प्रणालियों का बहिष्कार करता है। प्रेम इसका सिद्धान्त है, सुव्यवस्था इसका आधार और प्रगति इसका ध्येय है। नैतिक दृष्टि से इसका नियम है—दूसरों के लिए जीवित रहो!

इस प्रकार कॉम्ट के प्रत्यक्षवादी विचार में उन्होंने उसके धार्मिक या नैतिक पक्ष को वैज्ञानिक पक्ष से अधिक महत्ता प्रदान की। उनकी विचारधारा के इस परिवर्तन को उनके (कॉम्ट के) अनुयायियों ने उनके 'पतन' के रूप में देखा। यहाँ तक कि मिल ने लिखा है कि कॉम्ट के इस दयनीय पतन पर मुझे रोना आता है। परन्तु कॉम्ट का यह दावा था कि उनका प्रत्यक्षवाद धर्म और विज्ञान दोनों ही है और मानव-प्रगति के लिए इन्हें पृथक् करना उचित न होगा, बल्कि मानव-प्रगति धर्म और विज्ञान के सामंजस्य से ही सम्भव होगी।



विज्ञानों का संस्तरण

(Hierarchy of Sciences)

अथवा

ज्ञान या विज्ञानों का वर्गीकरण

(Classification of Knowledge or Sciences)

विज्ञानों के संस्तरण या वर्गीकरण की पृष्ठभूमि

(Background of the Hierarchy of Classification of Sciences)

अपने नवीन समाज-विज्ञान 'समाजशास्त्र' की नींव रखते हुए कॉम्ट ने मानवीय चिन्तन के तीन स्तरों—आध्यात्मिक, दार्शनिक एवं प्रत्यक्षवादी स्तरों—का उल्लेख किया है और साथ ही अपने इस समाज-विज्ञान के लिए एक वैज्ञानिक कार्य प्रणाली अर्थात् 'प्रत्यक्षवाद' को भी प्रस्तुत किया। परन्तु इतना-भर करके वे सन्तुष्ट नहीं थे। एक सच्चे 'पिता' के रूप में वे अपने 'मानस-पुत्र' समाजशास्त्र को विज्ञान की दुनिया में सुप्रतिष्ठित भी देखना चाहते थे। समाजशास्त्र के लिए इस वैज्ञानिक स्थिति को सुनिश्चित करने के लिए ही कॉम्ट ने 'तीन स्तरों का नियम' व 'प्रत्यक्षवाद' के बाद तीसरा आधार विज्ञानों के संस्तरण या वर्गीकरण के रूप में तैयार किया। प्रोफेसर बोगार्डस ने भी लिखा है कि, "कॉम्ट की योजना का तीसरा चरण विज्ञानों का वर्गीकरण था, जिसके अन्तर्गत समाजशास्त्र को नवीनतम पर सर्वश्रेष्ठ विज्ञान के रूप में दर्शाया गया।"

इस सम्बन्ध में यह स्मरणीय है कि ग्रीक विचारकों ने भी समस्त विज्ञानों का वर्गीकरण तीन श्रेणियों में किया था और वे थे—भौतिकशास्त्र, नीतिशास्त्र तथा राजनीति-शास्त्र। प्रख्यात दार्शनिक बेकन ने भी मानसिक शक्तियों के तीन पक्षों—स्मरणशक्ति, कल्पनाशक्ति तथा तर्कशक्ति से सम्बन्धित तीन अध्ययन-शास्त्रों का उल्लेख किया है और वे हैं—इतिहास, कवित्व तथा विज्ञान।

विज्ञानों के वर्गीकरण का विचार कॉम्ट को सेंट साइमन से मिला था। यद्यपि आप सेंट साइमन के इस विज्ञान से तो सहमत थे कि विज्ञानों का वर्गीकरण वैज्ञानिक ढंग से किया जाना चाहिए, फिर भी सेंट साइमन के वर्गीकरण से आप सहमत न थे। उनका दावा था कि आप सेंट साइमन से कहीं अधिक वैज्ञानिक आधारों पर विज्ञानों का वर्गीकरण या संस्तरण प्रस्तुत कर सकते हैं। इन आधारों का उल्लेख उन्होंने अपनी कृति '*Positive Philosophy*' में किया है। कॉम्ट का इस पुस्तक को लिखने का एक उद्देश्य अपने नवीन विज्ञान 'समाजशास्त्र' के लिए एक सुदृढ़ व वैज्ञानिक नींव को ढूँढ़ना था जिससे कि समाजशास्त्र का अध्ययन-क्षेत्र और इसका अन्य प्राकृतिक विज्ञानों से सम्बन्ध स्पष्ट हो जाए।

संस्तरण के दो आधार या सिद्धान्त

(Two Basis or Principles of Hierarchy)

उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए कॉम्ट ने विज्ञानों का एक नवीन वर्गीकरण या संस्तरण उतार-चढ़ाव के आधार पर प्रस्तुत किया और इसके लिए उन्होंने दो आधारों या सिद्धान्तों को निश्चित किया। वे हैं—

1. पराश्रयता वृद्धि का सिद्धान्त एवं
2. घटती हुई सामान्यता और बढ़ती हुई जटिलता का सिद्धान्त।

अब हम इन्हीं दो सिद्धान्तों या आधारों के विषय में विवेचना करेंगे—

1. पराश्रयता वृद्धि-क्रम का सिद्धान्त (The Principle of the order of increasing dependence)—विज्ञानों के वर्गीकरण या संस्तरण को प्रस्तुत करने के लिए कॉम्ट ने पराश्रयता वृद्धि क्रम के सिद्धान्त को चुना। दूसरे शब्दों में, कॉम्ट के विचारानुसार ज्ञान या विज्ञान की प्रत्येक शाखा अपने से पहली शाखा या विज्ञान के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर आश्रित होती है। इन निर्भरता का परिणाम यह होता है कि ज्ञान या विज्ञान की एक शाखा से दूसरी शाखा को जैसे-जैसे हम आगे बढ़ाते जाते हैं वैसे-वैसे उस शाखा की निर्भरता में वृद्धि होती जाती है। इस सिद्धान्त के अनुसार जो सर्वप्रथम विज्ञान है वह किसी पर निर्भर नहीं; इसके बाद जो दूसरा विज्ञान विकसित होगा वह प्रथम विज्ञान पर आश्रित या निर्भर होगा; जो तीसरा विज्ञान होगा वह पहले और दूसरे विज्ञान पर आश्रित होगा; जो चौथा विज्ञान होगा वह पहले, दूसरे और तीसरे विज्ञान पर निर्भर होगा और इसी क्रम से विज्ञान की प्रत्येक शाखा की निर्भरता में वृद्धि होती जाएगी। इसलिए कॉम्ट के विज्ञानों के वर्गीकरण के सिद्धान्त को 'निर्भरता वृद्धि-क्रम का सिद्धान्त'

कहा गया है। आगे की विवेचना से यह सिद्धान्त और भी स्पष्ट हो जाएगा।

2. घटती हुई सामान्यता और बढ़ती हुई जटिलता का सिद्धान्त (The Principle of decreasing Generality and increasing Complexity)—कॉम्ट के अनुसार विज्ञानों का विकास एक विशेष क्रम से होता है और वह क्रम है 'घटती हुई सामान्यता और बढ़ती हुई जटिलता'। दूसरे शब्दों में, जैसे-जैसे नवीन विज्ञान का जन्म होता है वैसे-वैसे उस विज्ञान की अध्ययन-वस्तु क्रमशः कम सामान्य और अधिक जटिल होती जाती है। कॉम्ट के विज्ञानों के वर्गीकरण के सिद्धान्त के अनुसार, एक विज्ञान की अध्ययन-वस्तु जिस प्रकार की होती है, उसी के अनुसार, उस विज्ञान की अन्य विज्ञानों पर निर्भरता तथा विज्ञानों के संस्तरण में उसका स्थान निश्चित होता है। अध्ययन-वस्तु जितनी ही विशिष्ट तथा जटिल होगी उस विज्ञान की अपने से पहले वाले विज्ञान या विज्ञानों पर निर्भरता या पराश्रयता उतनी बढ़ती जाएगी। यह इसलिए होता है क्योंकि सरल और सामान्य घटनाएँ पहले आती हैं और उनका अध्ययन करना भी सरल है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पहला विज्ञान वह है जो सबसे सरल विषय या घटनाओं का अध्ययन करता है और जो घटना सबसे अधिक सरल है वह सबसे अधिक सामान्य भी होती है—सामान्य इस अर्थ में है कि वह सब स्थानों पर विद्यमान है। इस प्रकार सबसे प्रथम विज्ञान सबसे अधिक सामान्य और सबसे कम जटिल घटनाओं या विषयों से सम्बन्धित होता है। इस प्रथम विज्ञान के बाद जिन अन्य विज्ञानों का विकास हुआ उनका अध्ययन-विषय क्रमशः कम सामान्य और अधिक जटिल होता गया। इस प्रकार दूसरा विज्ञान प्रथम विज्ञान से अधिक जटिल विषय-वस्तु से सम्बन्धित होता है और तीसरा विज्ञान दूसरे विज्ञान से कम सामान्य और अधिक जटिल विषय से सम्बन्धित होता है। यही क्रम चलता रहता है। विज्ञानों के विकास के इस क्रम में चूँकि प्रत्येक विज्ञान का अध्ययन-विषय क्रमशः जटिल होता जाता है, इस कारण प्रत्येक विज्ञान अपने से पहले विज्ञान या विज्ञानों की खोजों, निष्कर्षों और सिद्धान्तों पर क्रमशः अधिक निर्भर होता जाता है अर्थात् उसकी पराश्रयता में क्रमशः वृद्धि होती जाती है। इस प्रकार प्रत्येक विज्ञान अपने से पहले के विज्ञान या विज्ञानों पर आधारित रहते हुए अगले विज्ञान के लिए आधार प्रस्तुत करता है। साथ ही कॉम्ट के मतानुसार प्रत्येक विज्ञान अपने पिछले विज्ञान या विज्ञानों पर केवल निर्भर ही नहीं रहा है, बल्कि वह पिछले विज्ञान या विज्ञानों को अपनी खोजों से सींचता भी रहता है।

विज्ञानों का संस्तरण या वर्गीकरण

(Hierarchy or classification of Sciences)

अपने उपर्युक्त सिद्धान्त के आधार पर कॉम्ट ने विज्ञानों का जो संस्तरण प्रस्तुत किया है, वह इस प्रकार है—

- (1) गणितशास्त्र (Mathematics);
- (2) खगोलशास्त्र (Astronomy);

- (3) भौतिकशास्त्र (Physics);
- (4) रसायनशास्त्र (Chemistry);
- (5) प्राणिशास्त्र (Biology);
- (6) समाजशास्त्र (Sociology)।

विज्ञान के संस्तरण में सर्वप्रथम स्थान गणितशास्त्र का है। इसका कारण कॉम्ट के मतानुसार यह है कि गणितशास्त्र सबसे अधिक पुराना, आधारभूत तथा दोषरहित विज्ञान है। गणित ही वह सबसे अधिक शक्तिशाली औजार है जिसको उपयोग में लाए बिना प्राकृतिक नियमों का अन्वेषण असम्भव है। इस अर्थ में यह मानव-चिन्तन का सबसे मौलिक उपकरण है। अनुसन्धान के क्षेत्र में, चाहे वह सामाजिक हो या प्राकृतिक, गणितशास्त्र से अधिक निर्भर योग्य और कोई भी विज्ञान नहीं है क्योंकि तथ्यों का यथार्थ नाम या विभिन्न तथ्यों के पारस्परिक सम्बन्धों का सुनिश्चित ज्ञान गणितशास्त्र की सहायता से ही सम्भव है। अन्य कोई भी विज्ञान अपने अन्वेषण या शोध-कार्य में तब तक कदापि सफल नहीं हो सकता जब तक कि वह गणितशास्त्र की सहायता न ले क्योंकि यही समस्त विज्ञानों का आधार या बुनियाद है। इसी बुनियाद के ऊपर अन्य सभी विज्ञान खड़े हैं और अपने को विज्ञान कहलाने के योग्य हैं। इसीलिए कॉम्ट विज्ञान के संस्तरण में गणितशास्त्र को प्रथम और आधारभूत स्थान प्रदान करते हैं।

विज्ञानों के संस्तरण में अन्य विज्ञानों के स्थान को निश्चित करने के लिए कॉम्ट ने सभी प्राकृतिक घटनाओं को दो बड़े भागों में विभाजित किया है—अजीवज (inorganic) और जीवज (organic)।

अजीवज घटनाओं को हम दो उप-भागों में बाँट सकते हैं— खगोल-सम्बन्धी (astronomical) और स्थलीय (terrestrial)। खगोल सम्बन्धी घटनाएँ अत्यधिक सामान्य होती हैं। ग्रह, नक्षत्रों आदि में बहुत ही कम परिवर्तन होता है। खगोलशास्त्र का सम्बन्ध इन्हीं खगोल-सम्बन्धी घटनाओं से होता है। ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र, पुच्छल तारे, उल्काएँ आदि खगोलशास्त्र के अध्ययन-क्षेत्र में आते हैं। सूर्य एक नक्षत्र है और बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, वृहस्पति, शनि, अरुण, वरुण व कुवेर ग्रह हैं तथा चन्द्रमा हमारी पृथ्वी का एक उपग्रह है। ये विभिन्न नक्षत्र, ग्रह और उपग्रह एक-दूसरे से कितनी दूरी पर स्थित हैं, ये किस प्रकार पारस्परिक आकर्षण शक्ति द्वारा एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं, इनका आधार क्या है, 'नक्षत्र-परिवार' क्या है (जैसे सूर्य के परिवार या 'सौर परिवार' में पृथ्वी, चन्द्रमा, मंगल, बुध इत्यादि अनेक ग्रह एवं उनके उपग्रह शामिल हैं), इनकी कितनी गति है आदि विषयों का अध्ययन खगोलशास्त्र करता है। यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि इस प्रकार के अध्ययन का क्या महत्त्व है, या धरती के मानव के लिए खगोल या आकाश-सम्बन्धी घटनाओं को जानने की क्या सार्थकता हो सकती है? इसका उत्तर अति सरल है। हम अपनी धरती सम्बन्धी घटनाओं के बारे में उस समय तक कुछ नहीं जान सकते जब तक कि हम पृथ्वी की प्रकृति तथा उसके दूसरे ग्रह-नक्षत्रों के साथ सम्बन्ध को न समझ लें। यह ज्ञान हमें खगोलशास्त्र से प्राप्त होता है।

स्थलीय भौतिकशास्त्र के अन्तर्गत दो विज्ञानों का समावेश है—भौतिकशास्त्र मुख्य और रसायनशास्त्र। भौतिक पदार्थों के विषय में जानने के लिए उनका भौतिक या रासायनिक विश्लेषण आवश्यक हो जाता है। इस कार्य के लिए दो पृथक् विज्ञान—भौतिकशास्त्र और रसायनशास्त्र हैं। भौतिकशास्त्र का अध्ययन-विषय रसायनशास्त्र के अध्ययन-विषय की अपेक्षा अधिक सामान्य है। यह तत्त्वों के स्थान पर पदार्थों से अधिक सम्बन्धित है। रासायनिक तत्त्व भौतिकशास्त्र के नियमों पर निर्भर करता है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि रासायनिक घटनाएँ भौतिकशास्त्र के नियमों से प्रभावित भी होती हैं। कोई भी रासायनिक क्रिया भार, ताप और विद्युत के नियमों से प्रभावित होती है। इस प्रकार अजीवज घटनाओं का अध्ययन तीन विज्ञानों—खगोलशास्त्र, भौतिकशास्त्र और रसायनशास्त्र—के द्वारा होता है।

जीवज घटनाओं के भी दो प्रकार हैं—व्यक्तिगत और सामूहिक। प्रथम के अन्तर्गत वनस्पति और पशु-जगत् की समस्त व्यक्तिगत या शारीरिक स्वरूपों की क्रियाएँ तथा संरचनाएँ आ जाती हैं। यह प्राणिशास्त्र का अध्ययन-विषय है। इसमें समस्त जीवन और उससे सम्बन्धित नियमों का अध्ययन सम्मिलित है। स्पष्ट है कि प्राणिशास्त्र रसायनशास्त्र पर निर्भर होता है क्योंकि पोषण तथा ग्रन्थि से रस के निकलने (secretion) के समस्त विश्वसनीय नियम हमें रसायनशास्त्र से ही प्राप्त होते हैं। इतना ही नहीं, प्राणिशास्त्र का सम्बन्ध भौतिकशास्त्र से है क्योंकि भौतिकशास्त्र प्राणिशास्त्र को जीवित प्राणियों के भार, ताप और अन्य सम्बन्धित तथ्यों का ज्ञान करवाता है। प्राणिशास्त्र के नियमों पर खगोलशास्त्र के नियमों का भी प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, यदि पृथ्वी की गति उसकी वर्तमान गति से अधिक हो जाए तो उसका परिणाम यह होता है कि शरीर-सम्बन्धी घटनाओं की गति भी निश्चित रूप से बढ़ जाएगी और जीवन की अवधि कम हो जाएगी। खगोलशास्त्र हमें यह भी बताता है कि पृथ्वी अपनी धुरी या अक्ष (axis) पर पश्चिम से पूर्व की ओर लट्टू की भाँति घूमती है और लगभग 24 घंटे में एक चक्कर पूरा करती है; इस दैनिक गति के कारण ही पृथ्वी का आधा भाग बारी-बारी से सूर्य के सामने आता-जाता रहता है और दिन-रात होते हैं। इसी प्रकार पृथ्वी एक अण्डाकार पथ पर गतिशील होकर सूर्य का चक्कर लगाती है जिसे वार्षिक गति या परिक्रमा कहते हैं। ऋतु परिवर्तन में इस वार्षिक गति का योग रहता है; यदि पृथ्वी में वार्षिक गति न होती तो वर्ष-भर एक-सी ऋतु रहती। पृथ्वी अपनी धुरी या अक्ष पर घूमती है; पृथ्वी का यह अक्ष कक्ष-तल पर लम्ब नहीं बल्कि झुका हुआ अर्थात् $66\frac{1}{2}$ अंश का कोण बनाता है। यदि पृथ्वी का यह अक्ष कक्ष-तल पर लम्ब हो जाए तो उसका नतीजा यह होगा कि सब जगह दिन-रात बराबर होने लगेंगे; साथ ही ऋतु परिवर्तन भी नहीं होगा अर्थात् सब जगह साल-भर एक-सा ही मौसम रहेगा। अक्ष के तिरछा होने के कारण ही दोपहर के समय सूर्य की ऊँचाई भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न होती है, दिन-रात छोटे-बड़े होते रहते हैं, ऋतु में परिवर्तन होता है, उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्ध में ऋतुएँ एक-दूसरे से भिन्न होती हैं तथा उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर दिन

और रात छह-छह महीने के होते हैं। इन सभी का प्रभाव शरीर-सम्बन्धी घटनाओं पर पड़ता है। अतः स्पष्ट है कि प्राणिशास्त्र खगोलशास्त्र का भी ऋणी है। इसके अतिरिक्त प्राणिशास्त्रीय अध्ययनों में जो यथार्थता पाई जाती है। वह गणितशास्त्र के कारण ही है। यदि प्राणिशास्त्र को अपने अध्ययन-कार्य में गणितशास्त्र का सहारा न मिलता तो वह वास्तव में दोषपूर्ण, अनिश्चित और अविश्वसनीय होता। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्राणिशास्त्र विज्ञानों के संस्तरण में आने से पहले सभी विज्ञानों पर आश्रित है।

जीवज घटनाओं का दूसरा प्रकार या भाग सामूहिक है। इस भाग का अध्ययन समाजशास्त्र के द्वारा होता है जोकि कॉम्ट द्वारा प्रस्तुत विज्ञानों के संस्तरण में सबसे अन्तिम विज्ञान है। इसलिए कॉम्ट ने इस विज्ञान को सबसे अधिक पराश्रित विज्ञान माना है जिसे कि अपने अध्ययन-कार्य में गणितशास्त्र, खगोलशास्त्र, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र एवं प्राणिशास्त्र सभी पर निर्भर रहना पड़ता है। ये सभी विज्ञान उसी क्रम से एक-दूसरे पर या अपने से पहले वाले विज्ञान या विज्ञानों पर निर्भर हैं जिस क्रम से इनका विकास हुआ है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कॉम्ट ने ज्ञान या विज्ञानों का संस्तरण निर्धारता वृद्धि-क्रम के सिद्धान्त के आधार प्रस्तुत किया है। सबसे अधिक बुनियादी स्थान गणितशास्त्र को दिया गया है क्योंकि यह सबसे अधिक सामान्य और प्राचीन विज्ञान है। इसके ऊपर खगोलशास्त्र का स्थान है जोकि मूल रूप में अपने से पहले के विज्ञान गणितशास्त्र पर आश्रित है। इसके ऊपर स्थलीय घटनाओं का अध्ययन करने वाले दो विज्ञानों क्रमशः भौतिकशास्त्र और रसायनशास्त्र को स्थान दिया गया है। भौतिकशास्त्र खगोलशास्त्र और गणितशास्त्र पर निर्भर है जबकि रसायनशास्त्र को अपने अध्ययन-कार्य में भौतिकशास्त्र, खगोलशास्त्र तथा गणितशास्त्र पर आश्रित रहना पड़ता है। इसके बाद शरीर तथा जीवन-सम्बन्धी विषयों का अध्ययन करने वाले प्राणिशास्त्र का स्थान है जोकि रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र, खगोलशास्त्र तथा गणितशास्त्र पर आश्रित है। इन विज्ञानों पर आधारित तथा सामूहिक या सामाजिक तथ्यों व घटनाओं का अध्ययन करने वाला विज्ञान सामाजिक भौतिकी या समाजशास्त्र का स्थान सबसे ऊपर है। इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि 'प्रत्यक्षवादी धर्म' या 'मानवता का धर्म' के सिद्धान्त को विकसित करते समय कॉम्ट ने उपर्युक्त छह विज्ञानों के अतिरिक्त एक सातवाँ और सबसे ऊपर का विज्ञान आचारशास्त्र का भी उल्लेख किया है। परन्तु इस अन्तिम विज्ञान का कोई विशेष उल्लेख या स्पष्टीकरण उनकी कृतियों में नहीं मिलता है। इस कारण कॉम्ट द्वारा प्रस्तुत ज्ञान या विज्ञानों के वर्गीकरण में गणितशास्त्र, खगोलशास्त्र, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, प्राणिशास्त्र तथा समाजशास्त्र, इन छह विज्ञानों को ही साधारणतया सम्मिलित किया जाता है और यह उचित भी है। इस वर्गीकरण को प्रस्तुत करने का एक प्रमुख उद्देश्य विभिन्न विज्ञानों की सापेक्षिक पूर्णता या यथार्थता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करना है। कॉम्ट ने स्वयं ही लिखा है कि "यह वर्गीकरण यथार्थ रूप में विभिन्न विज्ञानों की सापेक्षिक पूर्णता को बतलाता है; एक विज्ञान की सापेक्षिक पूर्णता परिशुद्ध ज्ञान

की मात्रा तथा उसकी विभिन्न शाखाओं के साथ सम्बन्ध पर निर्भर है। यह सरलता से देखा जा सकता है कि घटनाएँ जितनी ही अत्यधिक सामान्य, सरल और अमूर्त होती हैं उतनी ही वे दूसरों पर कम निर्भर करती हैं और उनकी यथार्थता या परिशुद्धता उतनी ही अधिक तथा दूसरे विज्ञानों के साथ उनका सम्बन्ध उतना ही स्पष्ट होता है। इस प्रकार जीवज घटनाएँ अजीवज घटनाओं की अपेक्षा कम यथार्थ तथा नियमबद्ध होती हैं और इनमें से भी स्थलीय घटनाएँ खगोल-सम्बन्धी घटनाओं की अपेक्षा कम यथार्थ तथा नियमबद्ध होती हैं। विज्ञानों का जो संस्तरण हमने प्रस्तुत किया है उससे यही तथ्य पूर्णतया स्पष्ट होता है।”

कॉम्टे का मत है कि हम किसी भी विज्ञान के विषय में उचित ज्ञान तब तक प्राप्त नहीं कर सकते जब तक उसके पहले वाले विज्ञान या विज्ञानों, जिस या जिन पर कि वह निर्भर है, के विषय में हम जानकारी प्राप्त न कर लें। उदाहरणार्थ, हम समाजशास्त्र की सहायता से मानव-समाज या सामाजिक घटनाओं के बारे में समुचित ज्ञान तब ही प्राप्त कर सकते हैं जब हमें इसके पहले वाले विज्ञानों—प्राणिशास्त्र, रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र, खगोलशास्त्र और गणितशास्त्र—के सम्बन्ध में कुछ सामान्य ज्ञान हो। यह एक मोटी-सी बात है कि प्राणिशास्त्र की सहायता से जब तक हम जीव तथा जीवन और उनसे सम्बन्धित नियमों के बारे में जानकारी प्राप्त न कर लेंगे तब तक मानव के सामाजिक जीवन की घटनाओं को समझना हमारे लिए कैसे सम्भव होगा? इसीलिए, कॉम्टे के विचारानुसार, प्रत्येक विज्ञान का अध्ययन उसी क्रम से करना चाहिए जैसाकि उपर्युक्त वर्गीकरण में प्रस्तुत किया गया है। इस संस्तरण में सबसे ऊपर समाजशास्त्र है जोकि अन्य विज्ञानों की तुलना में सबसे नवीन, सबसे अधिक पराश्रित, विशिष्ट तथा जटिल विज्ञान है। अब हम इसी विज्ञान ‘समाजशास्त्र’ के विषय में सविस्तार विवेचना करेंगे।



समाजशास्त्र—कॉम्टे का एक नया विज्ञान

(Sociology—A New Science of Comte)

कॉम्टे अपने समय की प्रचलित तात्त्विक तथा धार्मिक प्रविधियों द्वारा सामाजिक घटनाओं की अध्ययन-प्रणाली से सन्तुष्ट नहीं थे। आप तो वैज्ञानिक पद्धति को सर्वोच्च प्रधानता प्रदान करते थे। इसलिए आप सामाजिक अध्ययन-कार्य को भी निरीक्षण, परीक्षण तथा वर्गीकरण की व्यवस्थित या वैज्ञानिक कार्य-प्रणाली के अन्तर्गत लाने के पक्ष में थे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कॉम्टे एक ऐसे नए विज्ञान का सृजन करना चाहते थे जोकि उस समय प्रचलित धार्मिक तथा तात्त्विक विचारों से पूर्णतया विमुक्त हो ओर जोकि सामाजिक घटनाओं का अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से करे। आपका विश्वास था कि सामाजिक घटनाओं का अध्ययन एक विशेष अध्ययन-क्षेत्र है जोकि व्यक्ति के सामूहिक जीवन की अभिव्यक्ति होती है। जिस प्रकार प्राणिशास्त्र के अन्तर्गत समस्त व्यक्तिगत जीवन और उससे सम्बन्धित नियमों का अध्ययन सम्मिलित है, उसी प्रकार सामूहिक

जीवन और उससे सम्बन्धित आधारभूत नियमों के अध्ययन के लिए भी पृथक् विज्ञान की आवश्यकता है। कॉम्ट ने इस विज्ञान को पहले-पहल 'सामाजिक भौतिकी' की संज्ञा दी और फिर इसको बदलकर सन् 1838 में अपने नवीन विज्ञान का नाम 'समाजशास्त्र' रखा।

समाजशास्त्र की परिभाषा कॉम्ट ने इन शब्दों में की है—“समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था और प्रगति का विज्ञान है”। इस परिभाषा में उल्लेखित सामाजिक 'व्यवस्था' और 'प्रगति' की व्याख्या हम इस प्रकार कर सकते हैं—समाज एक 'व्यवस्था' है; इस व्यवस्था के अन्तर्गत अनेक उपव्यवस्थाएँ होती हैं। दूसरे शब्दों में, समाज एक अखण्ड व्यवस्था नहीं है, बल्कि अनेक भागों से मिलकर बना है। ये सभी एक-दूसरे पर आधारित और एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। इसी आधार पर कॉम्ट ने सामाजिक सावयव की कल्पना की थी, यद्यपि वैयक्तिक सावयव और सामाजिक सावयव को एक समझने की भूल न करने की कड़ी चेतावनी भी आप बार-बार देते हैं। आपका मत है कि इन दो प्रकार के सावयवों में समानताएँ हो सकती हैं और है भी, पर ये एक ही नहीं हैं। सामाजिक सावयव में, वैयक्तिक सावयव की भाँति, श्रम-विभाजन तथा विशेषीकरण होता है। दोनों में ही ऐकमत्य पाया जाता है, जिसका कि अर्थ कॉम्ट के अनुसार, अन्योन्याश्रित भागों में सामंजस्य का होना है। यही सामंजस्य सामाजिक व्यवस्था का आधार है। समाजशास्त्र सामाजिक जीवन की इसी व्यवस्था अर्थात् समाज के विभिन्न अन्योन्याश्रित (inter-dependent) भागों के बीच पाए जाने वाले सामंजस्य का अध्ययन करता है। परन्तु समाजशास्त्र का अध्ययन-क्षेत्र यहीं तक सीमित नहीं है क्योंकि यह सामाजिक व्यवस्था का ही नहीं अपितु सामाजिक प्रगति का भी विज्ञान है। कॉम्ट के अनुसार, सामाजिक व्यवस्था का परम उद्देश्य ही नहीं अपितु मौलिक आधार भी प्रगति है। मानव का बौद्धिक तथा नैतिक विकास ही सामाजिक प्रगति है। दूसरे शब्दों में, सामाजिक प्रगति कुछ नैतिक तथा बौद्धिक नियमों या सिद्धान्तों के आधार पर सम्भव है। समाजशास्त्र उन नैतिक नियमों या सिद्धान्तों को भी प्रतिपादित करता है जिनके आधार पर सामाजिक प्रगति सम्भव हो सके। यह स्मरण रहे कि एक प्रगतिशील सामाजिक व्यवस्था में, कॉम्ट के अनुसार, सबसे अधिक महत्वपूर्ण वर्ग पुरोहितों का होना चाहिए। परन्तु ये पुरोहित धर्मशास्त्री नहीं बल्कि समाजशास्त्रीय होंगे जिनका कि प्रमुख कार्य उन समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना होगा जिन पर सामाजिक प्रगति की व्यापक नीति निर्भर करेगी। इसीलिए कॉम्ट का समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था व प्रगति का विज्ञान है।

कॉम्ट का समाजशास्त्र समाज का एक अमूर्त विज्ञान है। यह केवल मात्र आर्थिक, राजनीतिक, वैधानिक या अन्य किसी विशिष्ट प्रकार की घटनाओं का विज्ञान नहीं है। यह वह विज्ञान है जोकि उन आधारभूत नियमों को खोजता है जिन पर कि समस्त सामाजिक विज्ञान आधारित हैं।

कॉम्ट का समाजशास्त्र एक समन्वयात्मक विज्ञान भी है। आपने इसे समन्वयात्मक विज्ञान इस कारण कहा है कि आपका समाजशास्त्र सामाजिक जीवन के किसी भी विशिष्ट

पक्ष का अध्ययन नहीं करता है, यह तो समाज का अध्ययन समग्र रूप में करता है। समाजशास्त्र का सम्पर्क केवल आर्थिक या धार्मिक या नैतिक या वैज्ञानिक घटनाओं से नहीं है; यह तो इन सबसे सम्बन्धित है और इन सबका अध्ययन करता है। कॉम्ट का विश्वास है कि सामाजिक जीवन के विभिन्न अंग या भाग एक-दूसरे से अत्यधिक घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित तथा एक-दूसरे पर आश्रित हैं; इस कारण इनका पृथक् अध्ययन उचित नहीं है। समाजशास्त्र ही इन विभिन्न भागों को एक साथ मिलाकर अर्थात् एक-दूसरे से सम्बन्धित रूप में अध्ययन कर सकता है और करता है। इसलिए यह एक समन्वयात्मक विज्ञान है।

समाजशास्त्र एक समन्वयात्मक विज्ञान इस अर्थ में भी है कि यह अपने से पहले वाले सभी विज्ञानों—प्राणिशास्त्र, रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र, खगोलशास्त्र तथा गणितशास्त्र—द्वारा प्रतिपादित नियमों और सिद्धान्तों पर आधारित है। अपने आधारभूत विज्ञानों के संस्तरण में कॉम्ट ने समाजशास्त्र को सबसे ऊपर रखा है, परन्तु ऐसा करने में उनका उद्देश्य कदापि यह नहीं है कि वह समाजशास्त्र को अन्य विज्ञानों से ऊपर रखना चाहते हैं। समाजशास्त्र की सबसे ऊपर की यह स्थिति केवल इस बात की द्योतक है कि यह विज्ञान अपने से पहले वाले सभी विज्ञानों पर आधारित रहते हुए इनके प्रमुख नियमों या सिद्धान्तों की अपने में समेटता है। चूँकि समाज उन जीवित प्राणियों से बना हुआ है जिनका शरीर ब्रह्माण्ड के पदार्थ से बनता है, इस कारण समाजशास्त्र का प्रारम्भ भी इनसे सम्बन्धित विज्ञान के नियमों से होता है। कॉम्ट ने लिखा है कि “सर्वप्रथम उस माध्यम को, जिसमें सामाजिक जीवन विकसित हुआ है और उन प्राणियों को जो इसे प्रकट करते हैं, समझे बिना सामाजिक जीवन को समझा नहीं जा सकता। इस कारण अन्तिम विज्ञान (समाजशास्त्र) में हम तब तक कोई प्रगति नहीं कर सकेंगे जब तक हमें बाहरी दुनिया और वैयक्तिक जीवन के सम्बन्ध में पर्याप्त अमूर्त ज्ञान, इन नियमों का सामाजिक घटनाओं के विशिष्ट नियमों पर पड़ने वाले प्रभाव को परिभाषित करने के लिए, प्राप्त न हो जाएगा।”

चूँकि कॉम्ट के अनुसार समाजशास्त्र एक विज्ञान है, इसलिए यह एक भविष्यवाणी करने योग्य विज्ञान भी है। यदि यह भविष्यवाणी करने की क्षमता नहीं रखता है तो इसे विज्ञान होने का भी अधिकार नहीं है। पूर्व-ज्ञान या भविष्य-दृष्टि विज्ञान की कसौटी है। वैज्ञानिक नियम हमें इस बात का ज्ञान करवाते हैं कि भविष्य की सम्भावित प्रक्रियाएँ किस प्रकार की होंगी। वर्तमान सामाजिक अवस्था का अध्ययन करके उसी आधार पर उसके भविष्य के सम्बन्ध में बताना समाजशास्त्र का एक प्रमुख कार्य है।

इसमें सन्देह नहीं कि कॉम्ट ने अपने समाजशास्त्र का निर्माण वैज्ञानिक प्रणालियों की सहायता से सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करके उसके विषय में ज्ञान-भण्डार को बढ़ाने के उद्देश्य से किया है। परन्तु यही उनका एकमात्र उद्देश्य नहीं है। कॉम्ट समाजशास्त्र को सामाजिक पुनर्निर्माण और नैतिक जाग्रति लाने के नवीन कार्यक्रम में भी काम में लाना चाहते हैं। उनका विश्वास है कि मानव-जीवन के सम्बन्ध में ज्ञान

की वृद्धि मात्र बिल्कुल व्यर्थ है, यदि उस ज्ञान का उपयोग उसके जीवन को उन्नत करने के लिए न किया जाए। यह सच है कि एक वैज्ञानिक सदैव ही यह प्रयत्न करता है कि वह सत्य को अधिकाधिक जान ले, परन्तु यह भी गलत नहीं है कि वह सत्य को इसीलिए जानना चाहता है कि उस सत्य के प्रकट होने से मानव का कुछ कल्याण होगा। कॉम्ट भी इसी प्रकार के एक वैज्ञानिक हैं। इसीलिए समाजशास्त्र का यह भी एक महत्वपूर्ण कार्य है कि वह ज्ञान और कर्म के बीच एकता स्थापित करे ताकि सामाजिक घटनाओं के सम्बन्ध में जो कुछ भी ज्ञान हमें प्राप्त हो उसे हम सामाजिक पुनर्निर्माण के काम में भी उपयोग कर सकें। कॉम्ट का यह भी विश्वास है कि मानव-जीवन के कुछ नैतिक उद्देश्य होते हैं। इन नैतिक उद्देश्यों की पूर्ति मानवता के धर्म की स्थापना के द्वारा ही सम्भव है। समाजशास्त्र मानवता के ज्ञान और मानवता के धर्म में एकरूपता उत्पन्न करने में सहायक हो सकता है। यही कारण है कि कॉम्ट के आदर्श समाज में सबसे महत्वपूर्ण वर्ग पुरोहित का होगा और ये पुरोहित धर्मशास्त्री नहीं बल्कि समाजशास्त्री होंगे। समाजशास्त्री मानवता के सेवक बनें, यही कॉम्ट की आन्तरिक अभिलाषा के अनुसार, समाजशास्त्र की चरम सार्थकता है।



सामाजिक स्थिति-विज्ञान तथा सामाजिक गति-विज्ञान (Social Statics and Social Dynamics)

कॉम्ट ने समाजशास्त्र को दो प्रमुख भागों में बाँटा है—(1) सामाजिक स्थिति-विज्ञान और (2) सामाजिक गति-विज्ञान। सामाजिक स्थिति-विज्ञान समाज की संरचना से सम्बन्धित है जबकि सामाजिक गति-विज्ञान उसके विकास से। यहाँ हम इन दोनों की विवेचना विस्तारपूर्वक करेंगे।

सामाजिक स्थिति-विज्ञान (Social Static-Science)

सामाजिक स्थिति-विज्ञान समाजशास्त्र की वह शाखा है जोकि समाज का पूर्ण-विभाग के रूप में अध्ययन करती है। दूसरे शब्दों में सामाजिक व्यवस्था या संरचना के अन्तर्गत अनेक भाग होते हैं, सामाजिक स्थिति-विज्ञान इन समस्त भागों का अलग-अलग नहीं बल्कि एक सम्पूर्ण व्यवस्था के रूप में अध्ययन करता है। यह सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न भागों की क्रिया और प्रतिक्रिया के नियमों को खोजने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार का अध्ययन प्राणिशास्त्र में शरीर-रचनाशास्त्र के अध्ययन के अनुरूप है। सामाजिक स्थिति-विज्ञान का सम्बन्ध, कॉम्ट के अनुसार सामाजिक सावयव के ऐकमत्य (consensus of the social organism) से है जिनका कि अर्थ अन्योन्याश्रित भागों में सामंजस्य का होना है। कॉम्ट ने इस ओर संकेत किया है कि सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न भागों तथा समग्र में सदैव ही एक स्वतःप्रवृत्त सामंजस्य होना चाहिए और इसके तत्त्वों को अनिवार्य रूप में, किसी-न-किसी समय, एक प्रतिरूप में संयुक्त हो जाना चाहिए। इन तत्त्वों में केवल राजनीतिक संस्थाओं, सामाजिक व्यवहारों तथा विचारों का

ही आपस में संयुक्त होना पर्याप्त नहीं है बल्कि मानव की बौद्धिक, नैतिक तथा भौतिक क्रियाओं में भी उचित सामंजस्य होना चाहिए। अगर हम सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति को एक इकाई मान लें तो ऐकमत्य का अर्थ यह है कि समाज के अधिकांश सदस्यों में मतों की अधिक भिन्नता नहीं है और वे सामाजिक जीवन के सामान्य विषयों को समान दृष्टिकोण से देखते और विचारते हैं तथा सामान्य प्रयत्नों द्वारा उनका एक उचित हल ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं। सामाजिक स्थिति-विज्ञान का उद्देश्य सामाजिक सावयव के ऐकमत्य की खोज करना तथा सामाजिक स्थिरता की दशाओं को ढूँढ़ निकालना है। चूँकि कॉम्ट का यह विश्वास है कि वे एक ऐसे युग में रह रहे हैं जबकि सामाजिक सन्तुलन अत्यधिक बिगड़ा हुआ है, इस कारण सामाजिक स्थिति-विज्ञान का एक कर्तव्य यह भी है कि वह उन अवस्थाओं का भी अध्ययन करे जोकि इस सामाजिक सन्तुलन की पुनर्स्थापना के लिए आवश्यक हों। इस प्रकार सामाजिक स्थिति-विज्ञान किसी एक समय तथा स्थान में पाए जाने वाले ऐकमत्य के अध्ययन तक ही सीमित नहीं है, यह तो “सामाजिक सावयव के लिए उचित मौलिक ऐकमत्य से भी सम्बन्धित है। इसमें सभी समाजों का भूत और वर्तमान के लौकिक ऐकमत्य का अध्ययन आ जाता है।”

सामाजिक स्थिति-विज्ञान की सार्थकता यह है कि यह विज्ञान सामाजिक व्यवस्था के मूल सिद्धान्तों से हमारा परिचय करवाता है ताकि हम उसके महत्त्व को समझकर अपने सामाजिक जीवन को इस प्रकार संगठित करें। जिससे सामाजिक सन्तुलन बिगड़ने न पाए और मानव के भौतिक, नैतिक तथा बौद्धिक तीनों पक्षों का सन्तुलित विकास सरल हो सके। कॉम्ट का विश्वास है कि आज समाज में अराजकता की अवस्था है। निर्बलों को सबल पीड़ित कर रहे हैं और निर्बल सबलों से बदला लेने के लिए उन्मुख हैं। इस अवस्था का मूल कारण समाज में बौद्धिक अराजकता है। अधिकांश लोगों का बौद्धिक स्तर इतना निम्न है कि वे सामाजिक व्यवस्था के मौलिक नियमों से भी परिचित नहीं हैं। सामाजिक स्थिति-विज्ञान का एक परम कर्तव्य इस कमी को दूर करना है ताकि समाज में ऐकमत्य उत्पन्न हो सके।

कॉम्ट मध्ययुग के कैथोलिक धर्म द्वारा स्थापित ऐकमत्य से बहुत प्रभावित हुए प्रतीत होते हैं। उनका विश्वास है कि उस धर्म ने संगीत, कला, विज्ञान तथा उद्योग को एक महान् धार्मिक व्यवस्था में समन्वित कर दिया है और इस प्रकार प्रभावशाली राजनीतिक संगठन के लिए नैतिक आधार प्रस्तुत किया है इसलिए कॉम्ट का विश्वास है कि इस धर्म में सामाजिक पुनर्निर्माण के अत्यन्त बलशाली तत्त्व छिपे हुए हैं जिनका स्पष्टीकरण करके उनसे लाभ उठाया जा सकता है। उनका कहना है कि इन्हीं जीवित तथा प्रभावशाली तत्त्वों के कारण ही यह धर्म बिना किसी रक्तपात के यूरोप-व्यापी एक धार्मिक साम्राज्य स्थापित करने में सफल हो सका। कैथोलिक धर्म ने आध्यात्मिक तथा लौकिक शक्ति के बीच भेद स्पष्ट किया और इस प्रकार ईसाई धर्म की सार्वभौम नैतिकता को लौकिक क्षेत्र के ऊपर स्थापित किया। इस प्रकार इस धर्म ने एक ऐसे तत्त्व को समाज में बलशाली बनाया जिसका आदर दास और राजा दोनों ही कर सकते हैं। इस

प्रकार मध्यकालीन कैथोलिक धर्म उच्च र के ऐकमत्य का उदाहरण प्रस्तुत करता है। सामाजिक स्थिति-विज्ञान का यह काम है कि वह इस प्रकार की व्यवस्थाओं का विश्लेषण करे तथा उनमें निहित शक्ति के स्रोतों का पता लगाए। कॉम्ट का विश्वास है कि ऐकमत्य के सिद्धान्त सदा ही एक-से होते हैं, चाहे सामाजिक व्यवस्था की प्रकृति धार्मिक हो या तात्त्विक या प्रत्यक्ष।

सामाजिक गति-विज्ञान (Social Dynamics)

सामाजिक गति-विज्ञान मानव के विकास या प्रगति का अध्ययन है। यह 'मानवता की आवश्यक तथा निरन्तर गति' का विज्ञान है। इसके अन्तर्गत वे निश्चित नियम आ जाते हैं जिनके अनुसार समाज का क्रमिक विकास या परिवर्तन होता है। कॉम्ट ने यह घोषणा की कि वह प्रमाणित करना सरल है कि समाज का क्रमिक परिवर्तन सदैव ही एक निश्चित क्रम से हुआ है। यह क्रम निरपेक्ष तो नहीं है, फिर भी कुछ समानताओं तथा आवश्यक अनुक्रमों को तो ढूँढ़ा ही जा सकता है। साथ ही सामाजिक स्थितियों के विकास में निरन्तरता होती ही है। सामाजिक गति-विज्ञान इन्हीं सबका अध्ययन है।

कॉम्ट के अनुसार सामाजिक गति-विज्ञान का मूल सिद्धान्त यह है कि वह वर्तमान सामाजिक स्थिति की, इसके पहले की स्थिति के आवश्यक परिणाम के रूप में तथा आने वाली स्थिति की अपरिहार्य चालक के रूप में कल्पना करता है। इस दृष्टि से सामाजिक गति-विज्ञान का उद्देश्य उन नियमों को खोजना है जोकि इस निरन्तरता को निर्देशित करते हैं और जो संयुक्त रूप से मानव-विकास की दिशा निर्धारित करते हैं। इस प्रकार इस विज्ञान का प्रमुख कार्य सामाजिक प्रगति के वास्तविक सिद्धान्त को प्रतिपादित करना है।

कॉम्ट के अनुसार सामाजिक गति-विज्ञान इतिहास से अपने तथ्यों का संकलन करता है; इसलिए यह इतिहास का विज्ञान है। यह सामाजिक उत्पत्तियों के विषय में इतिहास से प्रारम्भ करता है, न कि तात्त्विक अटकलपच्चुओं से। पर सामाजिक गति-विज्ञान केवल भूत या वर्तमान का अध्ययन करके ही रुक नहीं जाता है। वे सिद्धान्त जोकि भूत की व्याख्या करते हैं, मानव के भविष्य के बारे में भी बताते हैं। कॉम्ट ने यह दावा किया कि सामाजिक गति-विज्ञान यह प्रमाणित करता है कि (क) मृत सदैव जीवित पर शासन करते हैं, और (ख) मनुष्य उत्तरोत्तर धार्मिक होता जा रहा है।



मानवता का धर्म

(The Religion of Humanity)

यद्यपि कॉम्ट द्वारा प्रस्तुत 'मानवता के धर्म' के अनुयायी आज बहुत कम हैं, फिर भी इसका उल्लेख किए बिना यह अध्ययन अधूरा ही रह जाएगा क्योंकि 'मानवता के धर्म' से पृथक् करके कॉम्ट के सामाजिक सिद्धान्तों की विवेचना असम्भव है। दूसरे